विचार बिन्दु

जिस प्रकार थोड़ी-सी वायु से आग भड़क उठती है, उसी प्रकार थोड़ी-सी मेहनत से किस्मत चमक उठती है। –अज्ञात

सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खतरे की घंटी बन रहा है परिवहन प्रदूषण

दिल्ली हो या जयपुर आजकल परिवहन प्रदूषण की चिंता सब को सताए जा रही है। वाहन बढ़ते जा रहे है साथ ही परिवहन प्रदुषण भी लगातार बढ़ता जा रहा है। पहले पर्यावरण प्रदूषण की चिंता ज्यादा होती थी। पेड़ कट रहे है और जंगल साफ़ होते जा रहे है। इधर कुछ अर्से से जंगल बढ़ने के समाचार मिल रहे है। जो हमारे लिए ख़ुशी की बात है मगर मोटर गाड़ियों से लगातार प्रदूषण बढ़ रहा है यह बेहद चिंताजनक है।

ग्रीनपीस इंडिया के क्लाइमेट एंड एनर्जी की एक ताज़ा रिपोर्ट के मुताबिक शहरों में निजी वाहनों, विशेष रूप से भारी एसयूवी की बढ़ती संख्या कार्बन डाइआक्साइड उत्सर्जन और प्रदूषण का एक प्रमुख कारण बन गई है। जैसे-जैसे लोग भारी निजी वाहनों की ओर बढ़ रहे हैं, शहरी हवा और अधिक जहरीली होती जा रही है।

इंटरनेशनल काउंसिल ऑन क्लीन ट्रांसपोर्टेशन की रिपोर्ट के अनुसार, यदि भारत अपने लक्ष्यों को लागू करता है, तो 2050 तक सड़क परिवहन से कार्बन उत्सर्जन में 50 प्रतिशत कमी आ सकती है। यह 2070 के नेट-जीरो लक्ष्य में सहायक होगा और दिल्ली-एनसीआर में वायु गुणवत्ता सुधारेगा। रिपोर्ट में भारत के 80 प्रतिशत घरेलू विनिर्माण दिल्ली सरकार ने 2026-27 का बजट पेश करते हुए परिवहन क्षेत्र में 8,374 करोड़ रुपये आवंटित किए। नई पॉलिसी, 7,500 बसें, मेट्रो और परियोजनाओं से यात्रा तेज और प्रदूषण कम होगा। जहाँ तक देश की राजधानी की बात है वर्ल्ड एयर क्वालिटी रिपोर्ट 2025 के अनुसार, दिल्ली दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानी बनी हुई है, जहां 2.5 का स्तर मानकों से 16 गुना अधिक है। भारत छठा सबसे प्रदूषित देश है। यह प्रदुषण के विभिन्न मानकों की एक समग्र रिपोर्ट है। आज हम बात कर रहे है परिवहन प्रदूषण की।

दुनिया भर के बहुत से देशों में सड़कों पर वाहनों की निरंतर बढ़ती संख्या परिवहन प्रदूषण का एक प्रमुख स्त्रोत है। हमारा देश भारत भी इस समय परिवहन प्रदूषण की विभीषिका से जूझ रहा है। सड़कों का आधारभूत ढांचा हमारी अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ आधार है। सड़कें हमारे परिवहन का मुख्य साधन हैं। जहाँ हर रोज हमारे लाखों व्यवसायिक और निजी वाहन सरपट सड़कों पर दौड़ते हैं। सड़क परिवहन ने सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। सड़क परिवहन के विस्तार को जहां परिवहन के विकास से जोड़कर देखा जाता है, वहीं पर्यावरण पर इसके दुष्प्रभाव भी किसी से छिपे नहीं हैं। परिवहन के साधनों के तीव्र विकास के साथ प्रदूषण जैसे दुष्परणाम को भी हम भुगत रहे है। हमें परिवहन से हो रहे प्रदूषण को रोकने पर ध्यान देना होगा। देश में कुल वायु प्रदूषण का लगभग 40 प्रतिशत सड़क यातायात के कारण होता है और इसलिए देश में सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना बहुत जरूरी है।

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने परिवहन प्रदूषण की समस्या पर पर देशवासियों को विश्वास दिलाया है की पारिस्थितिकी और पर्यावरण केंद्र सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है और प्रदूषण को रोकने के लिए सरकार कई विकल्पों पर विचार कर रही है और उसी लिहाज से विभिन्न परियोजनाओं पर युद्धस्तर पर काम कर रही है।

उन्होंने कहा देश में वाहन प्रदुषण को रोकने के लिए सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना बहुत जरूरी है। सरकार सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न उपाय लागू कर रही है।

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने परिवहन प्रदूषण की समस्या पर पर देशवासियों को विश्वास दिलाया है की पारिस्थितिकी और पर्यावरण केंद्र सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है और प्रदूषण को रोकने के लिए सरकार कई विकल्पों पर विचार कर रही है और उसी लिहाज से विभिन्न परियोजनाओं पर युद्धस्तर पर काम कर रही है।

भारत 140 करोड़ लोगों का देश है और मोटर वाहनों या ऑटोमोबाइल का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। ये वाहन या तो पेट्रोल या डीजल से संचालित होते हैं, पर्यावरण और हमारे पारिस्थितिकी तंत्र को बेहद प्रभावित करते हैं। आमतौर पर कार से निकलने वाले प्रदूषक तत्व वातावरण में ग्रीनहाउस उत्सर्जन के सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक हैं। आज पूरी दुनिया ग्लोबल वार्मिंग के डर से गुजर रही है और इसका सबसे बड़ा कारण वाहन प्रदूषण का बढ़ता स्तर है जिस पर हम सभी को शीघ्र ध्यान देने की आवश्यकता है। सड़क पर वाहनों की बढ़ती संख्या के साथ वाहन प्रदूषण के प्रभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। वाहन प्रदूषण के प्रभाव पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों को बुरी तरह से प्रभावित कर रहे हैं और स्वास्थ्य संबंधी बहुत सारी समस्याएं पैदा कर रहे हैं।

मोटर गाड़ियों से निकले धुएँ के कारण बच्चों में सांस से सम्बन्धित रोग तथा नजले की शिकायत बढ़ रही है। वाहनों से निकलने वाले धुएँ में कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन, अलडीहाइड, लेड ऑक्साइड प्रमुख हैं जो कि वायुमंडल को प्रदूषित करती हैं। आजादी से पूर्व भारत में परिवहन के सीमित साधन थे। आजादी के बाद इस दिशा में तीव्र गति से काम हुआ। परम्परागत साधनों के अलावा सड़क, रेल, वायु और जल परिवहन यातायात के मुख्य साधन है। यहाँ हम सड़क परिवहन की बात करना चाहते है जो सबसे प्रचलित और लोकप्रिय साधन माना जाता है। परिवहन अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवहन के कारण ही कच्चा माल कारखानों तक पहुँच पाता है और उत्पाद ग्राहकों तक पहुँच पाते हैं। परिवहन से हमारा आशय यात्रियों एवं वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाने ले जाने से है। परिवहन के साधन किसी देश के उद्योग व कृषि के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसी भी देश में परिवहन तंत्र की सघनता और आधुनिकता वहाँ के आर्थिक विकास का संकेत है। भारत एक विशाल देश है, जिसमें प्राकृतिक, आर्थिक, सामाजिक व अन्य विविधताएँ पाई जाती है। इन विविधताओं को एकता के सूत्र में बांधने में परिवहन साधनों का विशेष योगदान है। परिवहन के माध्यम से ही कृषि तथा औद्योगिक उत्पादन उपभोक्ताओं तक पहुँचते हैं।

भारत में सड़क परिवहन की शुरुआत रेल परिवहन से बहुत पहले ही हो गया था। निर्माण और रखरखाव के मामले में रेल की तुलना में सड़कें बेहतर साबित होती हैं। देश के आर्थिक जीवन में परिवहन का अत्यधिक महत्व होता है। वर्तमान प्रणाली में यातायात के अनेक साधन, जैसे-रेल, सड़क, वायु परिवहन इत्यादि शामिल हैं। सड़कों का देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। सड़कों का आधारभूत ढांचा हमारी अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ आधार है। भारत के परिवहन क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 5.5 प्रतिशत का योगदान है । इनमें सड़क परिवहन का हिस्सा लगभग 5 प्रतिशत है।

सड़क नेटवर्क के मामले में देश दुनिया में दूसरे स्थान पर है। सड़कें देश के सभी हिस्सों और समाज के सभी वर्गों को स्पर्श करती हैं। कृषि हो या व्यापार, उद्योग हो या सामाजिक सरोकार, सड़कें सबके लिए विकास का मार्ग हैं। सड़कें किसी भी इलाके के विकास की बुनियाद होती हैं। सड़क परिवहन किसी भी राष्ट्र की जीवन रेखा मानी जाती है। भारत में सड़क परिवहन में काफी विकास हुआ है। यात्रियों की कुल संख्या में से 87 प्रतिशत से ज्यादा सड़क परिवहन से यात्रा करते हैं और माल की आवा-जाही 60 प्रतिशत से ज्यादा सड़क परिवहन से होती है। भारत में लगभग 55 लाख किमी लंबी सड़कों का जाल है। इस नेटवर्क में राष्ट्रीय राजमार्ग, एक्सप्रेसवे, स्टेट हाइवे, जिला सड़क, पीडब्लूडी सड़कें, परियोजना सड़कें, ग्रामीण सडकें हैं।

सड़कों को चार वर्गों में विभाजित किया गया। ये राष्ट्रीय राजमार्ग, प्रांतीय राजमार्ग, जिला सड़कें और ग्रामीण सड़कें है। भारत में सड़क घनत्व इस समय लगभग 1.43 किलोमीटर प्रति वर्ग किलोमीटर है, जो कई देशों से बेहतर है। सड़कों के नेटवर्क के विकास की जिम्मेदारी केंद्र सरकार, राज्य सरकारों और स्थानीय प्रशासन की होती है। राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंबाई एक लाख चार हजार किलोमीटर है, जो सड़कों के कुल नेटवर्क के दो प्रतिशत से कम है। लेकिन इन मार्गों से कुल सड़क परिवहन का 40 प्रतिशत से अधिक परिवहन होता है। इस स्थिति में सरकार के साथ साथ हम सब का दायित्व है अपने वाहनों की प्रदूषण जाँच समय पर करवाएं और परिवहन प्रदूषण के बढ़ते खतरे से बचे।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

एलपीजी, पेट्रोलियम व उर्वरकों की निर्बाध उपलब्धता: संवेदनशील प्रबंधन

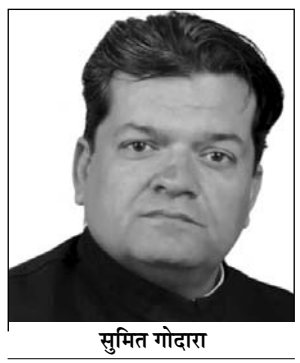

सुमित गोदारा

वैश्विक भू-राजनीतिक के वर्तमान दौर में मध्यपूर्व में जारी तनाव ने ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखलाओं को झकझोर दिया है। मध्यपूर्व एशिया की इन तात्कालिक परिस्थितियों के कारण कच्चे तेल, गैस और उर्वरकों की आपूर्ति प्रभावित हुई है। ऐसे संवेदनशील समय में राज्य सरकार संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ ही जन विश्वास को बनाए रखने, अफवाहों पर नियंत्रण रखने और वितरण व्यवस्था को पारदर्शी व प्रभावी बनाए रखने के सार्थक प्रयास कर रही है।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के कुशल नेतृत्व में राज्य सरकार ने इस चुनौती को अवसर में बदलते हुए सक्रिय, सजग और परिणामोन्मुखी रणनीति अपनाई है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में किए गए राष्ट्रीय स्तर के प्रयासों और केंद्र सरकार के साथ सतत समन्वय ने इस संकट के प्रभाव को काफी हद तक सीमित किया है। देशभर में रिफाइनरियों के माध्यम से एलपीजी उत्पादन में वृद्धि, कच्चे तेल का पर्याप्त भंडारण और राज्यों को अतिरिक्त केरोसिन आवंटन जैसे निर्णय इस दिशा में महत्वपूर्ण साबित हुए हैं।

राज्य सरकार ने इस चुनौती को गंभीरता से लेकर तत्परता, समन्वय और सख्ती के साथ एलपीजी, पेट्रोलियम पदार्थों और उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित की है। यह सक्षम प्रशासनिक प्रबंधन के कारण संभव हुआ है। इससे स्पष्ट है कि संकट की घड़ी में सरकार आमजन के साथ पूरी मजबूती से खड़ी है।

संतोष का विषय है कि राजस्थान में एलपीजी की उपलब्धता पूरी तरह नियंत्रण में है। घरेलू एलपीजी की औसत मासिक खपत लगभग 1.55 लाख मीट्रिक टन और व्यावसायिक खपत लगभग 14,700 मीट्रिक टन है। यह राष्ट्रीय खपत का लगभग 5.5 प्रतिशत है। राज्य में 1 करोड़ 84 लाख से अधिक घरेलू उपभोक्ताओं को नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

सरकार ने पूर्वानुमान आधारित रणनीति अपनाते हुए एलपीजी स्टॉक को सुदृढ़ किया है। फरवरी 2026 में घरेलू गैस का औसत दैनिक स्टॉक लगभग 22 हजार मीट्रिक टन था। इसे मार्च में बढ़ाकर लगभग 24 हजार मीट्रिक टन किया गया है। इससे उपलब्धता 4.3 दिन से बढ़कर 5 दिन तक सुनिश्चित हो गई है। वहीं व्यावसायिक गैस का स्टॉक 14 दिनों तक सुरक्षित रखा गया है। इससे उद्योग, होटल, अस्पताल और अन्य आर्थिक गतिविधियां अप्रभावित रहेगी।

उल्लेखनीय है कि केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित अतिरिक्त आवंटन मानकों को पूरा करते हुए राजस्थान अठाणी राज्यों में शामिल हुआ है। इसके परिणामस्वरूप राज्य को व्यावसायिक एलपीजी का 10 प्रतिशत अतिरिक्त आवंटन प्राप्त हुआ है। यह राजस्थान की प्रशासनिक दक्षता और समन्वय का प्रमाण है।

आपूर्ति बढ़ाने के साथ ही उसके न्यायसंगत वितरण और दुरुपयोग की रोकथाम भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इस दिशा में राज्य सरकार ने बहु-स्तरीय निगरानी व्यवस्था स्थापित की है। राज्य स्तर पर उच्च स्तरीय समिति गठित कर गृह, खाद्य, पुलिस और ऑयल कंपनियों के अधिकारियों को एक मंच पर लाया गया है। वहीं जिला स्तर पर कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक और रसद विभाग के अधिकारियों की संयुक्त टीमें सक्रिय रूप से निरीक्षण कर रही हैं।

कालाबाजारी, जमाखोरी और अवैध रिफिलिंग जैसी गतिविधियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की गई है। अब तक 1,388 गैस वितरकों की जांच, 1,404 स्थानों पर छापे, 3,246 सिलेंडरों की जब्ती, 422 प्रकरण दर्ज और 23 एफआईआर दर्ज की जा चुकी हैं। यह स्पष्ट संदेश है कि आमजन की आवश्यकताओं के साथ किसी भी प्रकार की अनियमितता बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए वितरण प्रणाली में भी महत्वपूर्ण सुधार किए गए हैं। एलपीजी डिलीवरी के लिए ओटीपी आधारित सत्यापन अनिवार्य किया गया है। मार्च माह में 90 प्रतिशत डिलीवरी ऑथेंटिकेशन कोड के माध्यम से हुई। यह फरवरी में मात्र 72 प्रतिशत थी।

उपभोक्ताओं के पंजीकृत मोबाइल नंबर में बदलाव अब आधार आधारित ई-केवाईसी के माध्यम से ही संभव है। डिलीवरी बॉय द्वारा पासबुक में एंट्री को अनिवार्य करने से किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी की संभावनाओं की रोकथाम की गई है।

जनसुनवाई और त्वरित समाधान के लिए 181, 112 और 14435 हेल्पलाइन नंबर अनवरत 24 घंटे संचालित किए जा रहे हैं। शिकायतों का निस्तारण 24 घंटे के अन्दर सुनिश्चित किया जा रहा है और मुख्य सचिव स्तर तक इसकी निगरानी हो रही है। यह व्यवस्था नागरिकों के प्रति उत्तरदायित्व का सशक्त उदाहरण है।

दीर्घकालिक समाधान की दिशा में भी राज्य सरकार गंभीरता से कार्य कर रही है। एलपीजी पर निर्भरता कम करने के लिए पाइप्ड नैचुरल गैस (पीएनजी) और सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन (सीजीडी) नेटवर्क के विस्तार पर जोर दिया जा रहा है। प्रदेश में 5 लाख कनेक्शन की आधारभूत संरचना तैयार है और 1.25 लाख कनेक्शन पहले ही चालू किए जा चुके हैं। औद्योगिक और व्यावसायिक इकाइयों को प्राकृतिक गैस अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह सुरक्षित होने के साथ ही तुलनात्मक रुप से सस्ती भी है। साथ ही इससे भविष्य में इस प्रकार के वैश्विक संकटों का प्रभाव कम किया जा सके।

उर्वरकों की उपलब्धता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। यह सीधे किसानों और खाद्य सुरक्षा से जुड़ा विषय है। केंद्र और राज्य सरकार के संयुक्त प्रयासों से यूरिया और डीएपी की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है। पिछले दशक में देश में 6 नए यूरिया संयंत्रों की स्थापना और उत्पादन क्षमता में 76 लाख मीट्रिक टन की वृद्धि इस दिशा में बड़ी उपलब्धि है।

वर्तमान परिदृश्य में प्रशासनिक प्रयासों के साथ ही समाज के सभी वर्गों, जनप्रतिनिधि, मीडिया, व्यापारी और आम नागरिक की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। अफवाहें और भ्रामक सूचनाएं किसी भी संकट को और गहरा बना सकती हैं। इसलिए जिम्मेदार नागरिक के रूप में हमें सत्यापित जानकारी पर ही भरोसा करना चाहिए और किसी भी अनियमितता की सूचना तुरंत प्रशासन को देनी चाहिए। यह समय सामूहिक जिम्मेदारी निभाने का है।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा का यह संकल्प है कि किसी भी परिस्थिति में आमजन को आवश्यक वस्तुओं की कमी का सामना न करना पड़े। समन्वित प्रयासों, सख्त निगरानी और जनसहभागिता के माध्यम से हम इस संकट का सफलतापूर्वक सामना करने के साथ ही भविष्य के लिए एक मजबूत और आत्मनिर्भर आपूर्ति प्रणाली भी स्थापित करेंगे। वर्तमान चुनौती ने शासन की कार्यशैली को अधिक संवेदनशील, पारदर्शी और परिणामोन्मुख बनाया है। जनता का विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है, और इस विश्वास को बनाए रखना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

–सुमित गोदारा,
खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री, राजस्थान

समय-चेतना की वैज्ञानिक संरचना पर आधारित है भारतीय पंचांग

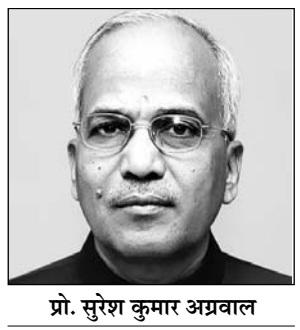

प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल

समय केवल घड़ी की सुइयों का अनुशासन नहीं है; वह ब्रह्मांडीय गति का जीवंत प्रतिबिंब है। मनुष्य ने जब से आकाश की ओर देखा है, तभी से उसने सूर्य की यात्रा, चन्द्रमा की कलाओं और नक्षत्रों की नि:शब्द गति में समय का रहस्य पढ़ ना आरम्भ किया। यही प्रयास आगे चलकर कैलेंडर और पंचांग जैसी समय-गणना प्रणालियों के रूप में विकसित हुआ। आज विश्व-समाज जिस ग्रेगोरियन कैलेंडर को समय-निर्धारण का सार्वभौमिक मानक मानता है, वह मुख्यत: प्रशासनिक सुविधा और ऐतिहासिक संशोधनों का परिणाम है; किन्तु भारतीय परंपरा में विकसित पंचांग समय को केवल तिथियों के क्रम में नहीं, बल्कि खगोलीय लयों के वैज्ञानिक सामंजस्य में समझने का प्रयास है। पंचांग समय का बहुआयामी विज्ञान है। सामान्यत: प्रचलित कैलेंडर जहाँ केवल दिनांक और वार की सूचना देता है, वहीं भारतीय पंचांग पाँच मूलभूत अंगों पर आधारित है- तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण। इन्हीं पाँच तत्वों के कारण इसे 'पंचांग' कहा गया। यह केवल तिथियों की सूची नहीं, बल्कि सूर्य और चन्द्रमा के सापेक्षिक स्थान, नक्षत्रीय विभाजन, ग्रह-स्थितियों और काल-खंडों की सूक्ष्म खगोलीय गणना का जीवंत दस्तावेज है।

भारतीय खगोल-चिंतन में आकाश को 27 नक्षत्रों में विभाजित किया गया है। चन्द्रमा लगभग 27.3 दिनों में पृथ्वी की परिक्रमा करता है, और इसी गति के आधार पर आकाशीय पथ को नक्षत्रों में बाँटा गया है। प्रत्येक नक्षत्र लगभग 1320' का विस्तार लिए हुए है-जो गणितीय सटीकता का परिचायक है। तिथि सूर्य और चन्द्रमा के कोणीय अंतर पर आधारित है। जब दोनों एक ही देशांतर पर होते हैं तो अमावस्या, और जब 180 के अंतर पर होते हैं तो पूर्णिमा होती है। 360 को 30 भागों में विभाजित करने पर प्रत्येक 12 के अंतर से एक तिथि निर्मित होती है। सूर्य एवं चन्द्रमा के संयुक्त अंशों से 27 योग निर्मित होते हैं, जबकि तिथि के आधे भाग को करण कहा जाता है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का काल 'वार' कहलाता है-जो पृथ्वी की वास्तविक गति पर आधारित है। सप्ताह में सात दिन होने का वैज्ञानिक आधार है। भारतीय परंपरा में समय-गणना नौ ग्रहों पर आधारित है-सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु। राहु-केतु छाया ग्रह माने गए हैं, इसलिए मुख्य सात ग्रहों के आधार पर सप्ताह के सात दिन निर्धारित किए गए। दिन-रात को मिलाकर 'अहोरात्र' कहा गया, जिसे 24 'होरा' में विभाजित किया गया। 'अहो' और 'रात्रि' के संयोग से 'होरा' शब्द बना। ग्रहों के होरा-क्रम के आधार पर ही वारों का नामकरण हुआ-प्रथम होरा जिस ग्रह का, उस दिन का नाम उसी पर आधारित। इस प्रकार रविवार, सोमवार, मंगलवार आदि की संरचना खगोलीय गणना का परिणाम है, न कि केवल सांस्कृतिक परंपरा का वर्ष में बारह महीने का आधार भी वैज्ञानिक है।

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा लगभग 365.25 दिनों में करती है, जबकि चन्द्रमा पृथ्वी की लगभग 12 परिक्रमाएँ करता है। यही कारण है कि वर्ष में 12 महीनों की व्यवस्था की गई। भारतीय पंचांग में सौर वर्ष सूर्य की गति पर एवं चन्द्र वर्ष चन्द्रमा की गति पर आधारित है। चन्द्र वर्ष लगभग 354 दिन का होता है, जो सौर वर्ष से लगभग 11 दिन कम है। इस अंतर को संतुलित करने हेतु प्रत्येक तीन वर्ष में 'अधिक मास' जोड़ा जाता है। यह खगोलीय विसंगति के वैज्ञानिक समाधान का अद्भुत उदाहरण है। महीनों के नामकरण का आधार नक्षत्रीय है। भारतीय पंचांग में महीनों के नाम उस नक्षत्र पर आधारित हैं जिसमें पूर्णिमा पड़ती है। चित्रा से चैत्र, विशाखा से वैशाख, ज्येष्ठा से ज्येष्ठ, श्रवण से श्रावण, अश्विनी से आश्विन, कृत्तिका से कार्तिक, मृगशिरा से मार्गशीर्ष, पुष्य से पौष, मघा से माघ, पूर्वा फाल्गुनी से फाल्गुन। यह नामकरण खगोलीय अवलोकन पर आधारित है, न कि किसी राजा या ऐतिहासिक घटना पर। भारतीय ग्रंथों में घटनाओं का उल्लेख ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति सहित मिलता है। उदाहरणत: वाल्मीकि रामायण में भगवान राम के जन्म का वर्णन चैत्र शुक्ल नवमी, पुनर्वसु नक्षत्र और कर्क लग्न में हुआ है। इसी प्रकार रामचरितमानस में नवमी तिथि, अभिजीत मुहूर्त और मध्यान्ह काल का उल्लेख है। यह दर्शाता है कि भारतीय परंपरा में तिथि-निर्धारण ग्रह-स्थिति के आधार पर किया जाता था। वर्तमान ग्रेगोरियन प्रणाली रोमन परंपरा से विकसित हुई- ने 10 महीनों का 304 दिन का वर्ष बनाया। ने जनवरी और फरवरी जोड़े। 46 ईसा पूर्व में ने 365 दिन और लीप वर्ष की व्यवस्था की। 1582 में पोप ग्रेगोरी ने संशोधन कर 10 दिन हटाए और आधुनिक ग्रेगोरियन कैलेंडर का स्वरूप दिया। स्पष्ट है कि यह प्रणाली कई ऐतिहासिक परिवर्तनों का परिणाम है, जबकि भारतीय पंचांग खगोलीय सिद्धांतों पर आधारित सतत परंपरा है। भारतीय प्रणाली गतिशील है-तिथियाँ खगोलीय गति के अनुसार घट-बढ़ सकती हैं। ग्रेगोरियन प्रणाली स्थिर है-प्रशासनिक सुविधा हेतु। भारतीय पंचांग समय की गणना का मात्र सांस्कृतिक उपकरण नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय गति का वैज्ञानिक प्रतिरूप है। सप्ताह की संरचना ग्रह-क्रम पर आधारित है। तिथि सूर्य-चन्द्र के कोणीय अंतर पर आधारित है। मास नक्षत्रीय स्थिति पर आधारित है। वर्ष सौर-चन्द्र समन्वय पर आधारित है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम वैश्विक समन्वय हेतु ग्रेगोरियन प्रणाली का उपयोग करते हुए भी अपनी वैज्ञानिक विरासत-भारतीय पंचांग-को समझें और उसके तार्किक आधार को पुन: प्रतिष्ठित करें। भारतीय समय-दृष्टि हमें यह सिखाती है कि समय केवल दिनांक नहीं, बल्कि प्रकृति और ब्रह्मांड के साथ मनुष्य के सामंजस्य का जीवंत संकेत है।

–प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल,
कुलगुरु, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

पश्चिम एशिया संकट के बीच जैसलमेर बना भारत का सौर कवच

अरबों की विदेशी मुद्रा बचा रहा राजस्थान

अचलदास डांगरा

वर्तमान में पश्चिम एशिया में गहराते भू-राजनीतिक संकट ने वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा पर सवाल खड़े कर दिए हैं। ऐसे समय में, राजस्थान का जैसलमेर जिला अपनी भौगोलिक स्थिति और सूर्य की किरणों की प्रचुरता के कारण भारत के लिए एक महत्वपूर्ण सौर ऊर्जा हब के रूप में उभर रहा है।

ऊर्जा आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के विजन और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान सरकार ने सौर ऊर्जा उत्पादन को प्राथमिकता दी है। हाल ही में मुख्यमंत्री ने जैसलमेर के भिनाजपुरा (पोकरण) में 975 मेगावाट और कुल 1.3 गीगावाट क्षमता के विशाल सौर ऊर्जा संयंत्र का उद्घाटन किया है।

प्रमुख उपलब्धि: राजस्थान अब 33.46 गीगावाट से अधिक स्थापित सौर क्षमता के साथ देश में शीर्ष स्थान पर है।

औद्योगिक सुविधाएं: राज्य की एकीकृत स्वच्छ ऊर्जा नीति-2024 के तहत निवेशकों को भूमि आवंटन, सब्सिडी और टैक्स में भारी छूट जैसी सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं।

विदेशी मुद्रा की बचत और आर्थिक लाभ : जैसलमेर में बढ़ते सौर उत्पादन से न केवल बिजली की किल्लत दूर हो रही है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी बड़ा सहारा मिल रहा है।

ईंधन खर्च में कमी: सौर ऊर्जा के विस्तार से कच्चे तेल और कोयले के आयात पर निर्भरता कम हुई है, जिससे भारत हर साल अरबों रुपये की विदेशी मुद्रा बचा रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने केवल सौर ऊर्जा के माध्यम से ईंधन लागत में 4.2 बिलियन, लगभग 35,000 करोड़ रुपये से अधिक की बचत दर्ज की है।

विदेशी निवेश (FDI): राजस्थान के नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में रिकॉर्ड 3.4 बिलियन का विदेशी निवेश आकर्षित हुआ है।

संकट का समाधान बना स्वर्ण नगरी का सूरजपश्चिम एशिया संकट के कारण कच्चे तेल की कीमतों में अस्थिरता के बीच, जैसलमेर के धोरों में लगे लाखों सोलर पैनल देश को सस्ती और प्रदूषण मुक्त बिजली प्रदान कर रहे हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अनुसार, जैसलमेर अब केवल रेतीले टीलों की भूमि नहीं, बल्कि देश की ऊर्जा सुरक्षा का केंद्र बन चुका है।

–अचलदास डांगरा,
वरिष्ठ पत्रकार, जैसलमेर

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 28 मार्च, 2026

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2083, पुषय नक्षत्र दिन 2:50 तक, सुकर्मा योग रात्रि 8:06 तक, गर करण प्रात: 8:26 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कुम्भ, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज रवियोग दिन 2:50 तक है। भद्रा रात्रि 8:16 से आरम्भ होगी। आज नवरात्र व्रत पारणा, नवरात्रोत्थापन, धर्मराज दशमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:58 से 9:29 तक, शुभ 12:32 से 2:14 तक, लाभ अमृत 2:04 से 5:06 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:26, सूर्यास्त 6:38

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

कर्क
व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है।

कन्या
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि हो सकती है।

तुला
स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होने लगेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है, उचित परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।